International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 20-11-2021, Accepted: 05-12-2021, Published: 20-12-2021
Volume 7; Issue 6; 2021; Page No. 85-86

हिंदी और भारतीय इतिहास में बाल साहित्य

आयुष द्विवेदी
हिंदी, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

सारांश
बाल साहित्य आज भी गतिशील है। एक पुख्ता हिस्सा कहाँ है इसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता। कहा जा सकता है की औपनिवेशिक समाज स्थापित हो जाने के कारण लेखकों को उचित समय या दृष्टिकोण नहीं मिला की इस ओर भी उनका ध्यान जा सके मुग़ल शासन में लेखक या तो भरण –पोषण के लिए लिखते रहे या फिर अंग्रेज़ शासन में स्वंत्रता की लड़ाई के खातिर कलम चलाते रहे द्य हालाँकि आधुनिक में समाज में बदलाव के दृष्टि से काफी रचनाएँ की गयीं जिसका एक स्वरुप बाल साहित्य के रूप में भी दिखता है द्य साहित्य और इतिहास दोनों में ही कुछ कुछ अंश उभरकर आतें हैं। पूर्णतः यह भी कहना गलत होगा की बाल साहित्य लिखा ही नहीं गया परन्तु यह भी नहीं कहा जा सकता की धाराप्रवाह बाल साहित्य की रचनाएँ की गयीं हैं। बदलते समय के अनुसार आज के लेखक इस पर पूर्ण जोर दे रहें हैं। चम्पक, बालक, नंदन यह आज के बाल साहित्य के केंद्र में हैं। यह कहा जा सकता है की आने वाले समय में इस साहित्य का भी अपना एक काल स्थापित हो जाएगा।

मूलशब्द: धाराप्रवाह, प्रभुत्व, परिपक्वता, मानवकृत, अभिव्यक्ति, विवादास्पद

प्रस्तावना
हिंदी और भारतीय इतिहास में साहित्य सदा ही गतिशील रहा, लेकिन इन सब में बाल साहित्य कहीं न कहीं पीछे छूट जाता है। ऐसा नहीं था की रचनाएँ नहीं की गयीं लेकिन बाल विधा को केंद्र में रखकर प्रयास कम ही हुए। २०वीं सदी तक हिंदी के इतिहास में बाल साहित्य का उद्गम होता दिखता है लेकिन इसका स्थाई काल आज तक स्थापित नहीं हो पाया है। जबकि १८वीं सदी तक पाश्चत्य में बाल साहित्य एक विशाल रूप ले चुका था। जापान, कोरिया जैसे देशों में इसकी नींव रखी जा चुकी थी।। मध्यकाल में कुछ रचनाओं को बाल साहित्य से जोड़कर कर देखा जाता है लेकिन क्या वे सचमुच बाल केन्द्रित थे या फिर हिंदी के रस विधान का एक निष्कर्ष था यह विषय थोड़ा विवादास्पद है।
साहित्य को देखने और समझने के मुख्यतः तीन बिंदु हैं :–

- के लिए
- के द्ववारा और
- के सम्बन्ध में

बाल साहित्य में 'के द्वारा' का पैमाना पूर्ण रूप से गायब रहा। हालाँकि आधुनिक युग में इसकी झलक देखने को मिलती है। भारतीय इतिहास में बाल सन्दर्भ पर कोई खास विचार देखने को नहीं मिलता है। लिखित रूप में ही नहीं बल्कि चित्रात्मक रूप में भी बाल वर्ग को सम्मलित नहीं किया गया।

मूलतः संस्कृत में लिखे गये पंचतंत्र की रचना लगभग ३०० ई .पू. माना जाता है। ऐसा माना जाता है की इसकी रचना चन्द्रगुप्त मौर्य के कार्यकाल में ही हुई है। इस ग्रंथ के रचयिता हैं पं॰ विष्णु शर्मा हैं लेकिन कहीं दृ कहीं रचयिता का नाम 'बसुभग' भी आया है। धार्मिक ग्रंथों में भी जो बाल सन्दर्भ मिलता है वह सिर्फ कहानी का अंग मात्र रहा है। रामचंद्र शुक्ल ने इस काल को वीरगाथा काल भी कहा है जिसका अर्थ है की वीर रस में की गयी रचनाएँ इस काल में मूल रूप से रहीं। इस काल में विशेष रूप से और कोई भी बाल साहित्य को केंद्र में रखकर अन्य कोई भी रचनाओं का उल्लेख नहीं मिलता है।

अमीर खुसरो, सूरदास, जगनिक वगैरह की रचनाओं को इसमें शामिल किया जाता है। राजस्थानी कवि जटमल की रचना 'गोरा बादल' को बाल साहित्य पहली रचना माना जाता है। भक्ति काल में भी कृष्ण के बाल रूप को बाल साहित्य से जोड़कर देखा जा सकता है लेकिन रस प्रधान को ध्यान में रखकर ही कवियों ने उनकी रचनाएँ की थी। उस समय राजाओं के आधीन कार्य करने के कारण भी इस संदर्भ में कवियों का ध्यान नहीं गया होगा। भूषण और सूडान को छोड़कर रीतिकाल एक सुरक्षित सजावटी काल है।
लेकिन बाल साहित्य की दृष्टि से सभी कर्मकांडी कवि सूरदास (अंधे) निकले। नायिका की युवावस्था से ही उसकी दृष्टि छीन ली गई और उसने उसे एक भयानक श्रंगार बना दिया। इसी कारण कुछ आलोचक श्रृंगार रस की प्रधानता के कारण रीतिकाल को श्रृंगार काल भी कहते हैं। सूर और तुलसी से कुछ कवियों ने बाल–कविता की परंपरा का विस्तार किया तो भी ऋतिकाल पर गहनों का एकमात्र प्रभुत्व होने का आरोप नहीं लगाया जा सकता। इतिहास में भी बाल वर्ग को उतनी महत्ता नहीं दी गयी।
तुलसी नदारद हैं तो सुहल की पूरी कविता में बच्चों के मनोविज्ञान की अनेक झलकियाँ हैं। सूरदास को हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ कवि माना जाता है जो बच्चों के विभिन्न व्यवहारों और विनोदी खेल स्थलों) माताओं की आंतरिक इच्छाओं) चिंता और भावनाओं का वर्णन करता है। उनके लेख की खास बात यह है कि इसे पढ़ने के बाद पाठक जीवन की नीरस और जटिल समस्याओं को भूलकर उस पर एकाग्र हो जाते हैं।
तुलसीदास द्वारा रचित रामचरित मानस में 'बालकाण्ड' भी है। उसमें एक प्रसंग है की एक दिन राजादशरथ भोजन करने बैठे और राम को साथ में खाने को कहा। राम नहीं आते हैं लेकिन बच्चे के साथ खेलते हुए कौशल्या की आवाज सुनते ही दौड़ पडतें हैं । पंक्ति है–

''भोजन करत बोलावत राजा) नहीं आवत तजि बाल समाजा)
कौसल्या जब बोलन जाई) ठुमकि–ठुमकि प्रभु चलहिं पराई''

इस तरह हम कह सकते है की– बालक के लिए कोई राजा नहीं होता) वह स्वयं अपने मन का राजा होता है। बड़ी–से–बड़ी बादशाहत भी उसकी तोतली बोली और निश्छल किलकारी पर नत मस्तक हो जाती है।

अकबरनामा जैसी रचनाओं में चित्रों का उल्लेख है लेकिन उन चित्रों में भी बाल वर्ग बहुत कम ही दिखलाई पड़ता है। लेकिन पाश्चात्य में इस काल से बाल साहित्य का उद्‌गम हो चुका था। इस काल में बाल साहित्य बच्चों तक कितना पहुँच पाया होगा यह बोल पाना थोडा मुश्किल है।

भारतेंदु युग में भारतेन्दु ने स्वयं 'अंधेर नगरी' नामक एक नाटक लिखा। जिसमें बच्चों की बचकानी दुनिया का हिस्सा देखा जा सकता है। इस नए प्रयास में राजा लक्ष्मण सिंह का नाटक बालक भरत भी उतना ही महत्वपूर्ण है। 'फ्रेडरिक पिन्काट' इंग्लैंड में बैठकर वे हिन्दी के साथ–साथ बच्चों के लिए भी चार भागों में एक पुस्तक लिख रहे थे। उस समय बिहार के स्कूलों में उनकी 'बाल दीपक' नामक पुस्तक पढ़ाई जाती थी।'बाल दीपक' की चर्चा आज भी होती है। बेताल पचीसी और सिंहासन बत्तीसी के साथ–साथ पंचतंत्र और हितोपदेश के अनुवादों ने भी बच्चों को रुचि के साथ पढ़ने का अवसर दिया।

द्विवेदी युग में मैथलीशरण गुप्त ने 'सरकस' नामक एक कविता लिखी जो बहुत प्रसिद्ध हुई। द्विवेदी ने स्वयं भाषा को तरल बनाने के साथ–साथ सरलता और अभिव्यक्ति की संक्षिप्तता के पक्ष में लिखना शुरू किया। ताकि बच्चे, बड़ों के साथ–साथ साहित्य को अपने जीवन का हिस्सा बना सकें। बाल साहित्य के क्षेत्र में सुभद्रा कुमारी चौहान का नाम बहुत महत्वपूर्ण है। उनकी कविताएँ, जो हम पाँचवीं और छठी में एक बार पढ़ते हैं,आज भी ताजा और प्रासंगिक हैं। कुछ पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं –

"यह कदम्ब का पेड़ अगर माँ होता यमुना तीरे
मैं भी उस पर बैठ कन्हैया बनता धीरे–धीरे
दे देती यदि मुझे बाँसुरी यह दो पैसे वाली
किसी तरह नीचे हो वह कदंब की डालीद्य"

इसी तरह एक दूसरी कविता भी बालक मन को केन्द्र में रखकर लिखी गई हैं। कुछ अंश प्रस्तुत हैं –

''बार–बार आती है मुझको मधुर याद बचपन तेरी
गया ले गया तू जीवन की सबसे मस्त खुशी मेरी।''"

हिंदी के बाल साहित्य का वास्तविक प्रारंभ आधुनिक काल से यानी बीसवीं सदी के आसपास मानना होगा। बाल साहित्य की शुरुआत के कारणों में से एक शिक्षा के लिए पाठ्य पुस्तकों की तैयारी की जरूरत थी। ईसाई मिशनरी स्कूल स्थापित किए गए और उनके कारण नए प्रकार की शिक्षा प्रणाली ने नई शैली की कहानियां लिखने के लिए प्रेरित किया। स्वतंत्रता के बाद भारतीय बाल साहित्य में बच्चों के अनुकूल ऐसा साहित्य लिखा गया है जो पुराने साहित्य की तरह उपदेशात्मक नहीं है।

बंगाली में जोगिंद्रनाथ सरकार द्वारा 1891 में लिखित कहानियों की पुस्तक 'हांसी और खेला' ने पहली बार कक्ष–कक्षा परंपरा को तोड़ा और यह बच्चों के लिए पूरी तरह मनोरंजक बनी। जब पाश्चत्य में बाल साहित्य जोर पकड़ रहा था तब कहा जा सकता है की भारत में भी कुछ साहित्यकारों का इस ओर ध्यान गया होगा। इस समय में कई पत्रिकाएं निकली जो विशेष रूप से बाल साहित्य की ओर इशारा करती हैं जैसे :– विद्यार्थी, शिशु, बालसखा वानर, कुमार, मनमोहन आदि। कई प्रतिष्ठित साहित्यकार जैसे रामनरेश त्रिपाठी, मैथलीशरण गुप्त, सुभद्राकुमारी चौहान आदि इन पत्रिकाओं में अपना योगदान देते रहे। जाहिर तौर पर यह आन्दोलन का दौर था और इस वक़्त स्वाभाविक रूप से आदर्शपरक, तिपरक, और देश प्रेम के नजरिये से ही रचनाएँ की गयीं। इस काल में बाल साहित्य की गति दिखती है। कुछ लेखकों का ध्यान इस ओर गया और इस विषय को महत्ता देते हुए रचनाये की जैसे लल्ली प्रसाद पाण्डेय, सोहनलाल द्विवेदी, द्वारका प्रसाद माहेश्वरी आदि।

कुछ ऐसी कहानियां और उपन्यास हैं जिन्हें उन्होंने बच्चों के लिए लिखा है। 'कुत्ते की कहानी' जिसे हिंदी का पहला बाल उपन्यास कहा जा सकता है और 'जंगल की कहानियाँ' शीर्षक से बाल कहानियों की रचना की है जिनमें जानवरों की प्रमुख भूमिका देखी जा सकती है। एक बच्चे के जीवन पर आधारित पहला सफल और कलात्मक भारतीय उपन्यास है – मन्नु भंडारी का 'आपका बंटी'। निर्मल वर्मा की 'लाल टीन की छत' में कैसे एक मासूम लड़की अपनी मासूमियत के कारण अत्यधिक यातना और अकेलेपन का शिकार हो जाती है। अज्ञेय के उपन्यास 'शेखरः एक जीवनी' में शेखर एक ऐसा लड़का है जो अपने जीवन का विस्तार करने के लिए लगातार संघर्ष करता है।रमेशचंद्र शाह के 'गोबर गणेश' में लेखक ने विनायक के माध्यम से बच्चों की इच्छाओं और आकांक्षाओं को अच्छी तरह से बताया है। उनका एक और उपन्यास 'किस्सा गुलाम' हैद्य जिसमें एक दलित लड़का– कुंदन, बौद्धिक स्तर पर बहुत आगे बढ़ता है, लेकिन कर्मकांड बंधन उसे नहीं छोड़ता।इन कहानियों से बच्चों के भीतर एक प्रकार की परिपक्वता का उद्‌गम कराया जा सकता है द्य

प्रेमचंद जानवरों के मनोविज्ञान को भी अच्छी तरह समझते थे। जानवरों की आत्मा और उसकी अभिव्यक्ति की ऐसी समझ लेखकों में दुर्लभ है। जानवरों को अक्सर मानवकृत किया जाता है। लेकिन ऐसा लगता है कि प्रेमचंद जानवरों को जानवरों के रूप में मौजूद रखते हुए उनके अंदरूनी हिस्सों को उजागर करने में सक्षम हैं। भले ही उन्हें मानवीय चरित्रों जैसी भाषा दी गई हो। ये सिर्फ जानवरों और पक्षियों की कहानियां नहीं हैं। यह सिर्फ मानवीय संवेदनाओं को दर्शाता है। उनकी कई कहानियाँ वयस्कों के लिए भी हैंद्य लेकिन बच्चों द्वारा भी इसका आनंद लिया जा सकता है। अच्छी बात यह है कि आज का बाल साहित्य संयोग आदि से नहीं, बल्कि अलग–अलग या समानांतर में बना है। आजकल हालांकि लोग बच्चों की रचनाओं के संदर्भ में विवादास्पद टिप्पणी करते हैंद्य वे कभी भी स्वयं बच्चों के लेखन के आधार पर टिप्पणी नहीं करते हैं।

आज से बाल साहित्य को सशक्त बनाने वाली पीढ़ी मजबूती से हमारे सामने उभर रही है। प्रदीप शुक्ल, वीणा भाटिया आदि सहित अनेक लेखकों की चर्चा है। भाषा के अनेक रूप आज के बाल साहित्य में सहज ही देखने को मिलते हैं। उर्दू या अंग्रेजी में लिखे गए बाल साहित्य का अंधाधुंध प्रयोग हो रहा है। उच्चारण की दृष्टि से आज का हिन्दी बाल साहित्य भी बहुत विविध है। आज के बाल साहित्य में अनेक प्रकार के भाषा–उच्चारण विद्यमान हैं। हिन्दी बाल साहित्य का प्रश्न न केवल द्वि–आयामी है, बल्कि कम–से–कम द्वि–आयामी है। एक तो यह कि पिछले कुछ वर्षो में हिन्दी बाल साहित्य ने अपनी विविधता का विकास किया है और अपने समय के बच्चों के साथ संभव हुआ है और दूसरी ओर बच्चों के लेखकों ने यह समझ पेश की है कि बचपन में खुद को थोपना अनुचित है। उसी तरह किसी बच्चे पर कृत्रिम भाषा थोपना भी अनुचित है।

संदर्भ सूची

1. आजकल बाल साहित्य–परम्परा और आधुनिकता बोध–विजय शंकर मिश्र
2. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास–डॉ बच्चन सिंह
3. मुशी प्रेमचंद कृत 'दुर्गादास' उपन्यास की भूमिका से उद्धृत
4. बाल साहित्य समीक्षा के प्रतिमान और इतिहास लेखन–डॉक्टर पाण्डेय
5. बाल साहित्य का स्वरुप और रचना साहित्य– डॉ सकुन्तला कालरा